

1. अस्, अस्ति Dhātup. 24, 57. (अस्ति P. 7, 4, 50. Vop. 9, 22. स्मैति RV. 1, 29, 1. 37, 15. स्थन 103, 5. AV. 1, 31, 2. 3, 8, 5. स्व und स्म ep.); conj. सत्सु Cat. Br. 3, 8, 2, 28; potent. स्याम् (स्यातन RV. 1, 38, 4); imperat. असाति, एधि (P. 6, 4, 119. Vop. 9, 8); imperf. आसम् (आसीत् P. 7, 3, 96. Vop. 8, 34. ved. auch आम् P. 7, 3, 97. RV. 10, 83, 7. 129, 3. 149, 2); conj. अस्म RV. 10, 27, 4. अस्म AV. 1, 16, 4. 6, 8, 1. अस्मि RV. 2, 26, 2. 10, 174, 3. अस्मत् 1, 9, 5. 89, 5. अस्मि 4, 53, 15. 6, 43, 14. असाम 1, 53, 15. 4, 2, 10. असाय AV. 3, 8, 4. 14, 1, 32. असाय RV. 8, 30, 2. अस्तन् 1, 38, 15. 89, 1. Cat. Br. 1, 1, 4, 23; perf. आस; part. praes. सत्. Die übrigen Formen fehlen und werden durch *भू* ersetzt P. 2, 4, 52. 1) *sein, dasein, vorhanden sein, Statt finden, geschehen, sich ereignen*: नासदासीन्ना सदासीत् RV. 10, 129, 1. ये स्य त्रयश्च त्रिंशच्च 8, 30, 2. अयमेवास्ति Cat. Br. 1, 6, 4, 19. तस्माद्देवाः सन्ति 3, 6, 2, 25. न ह पुरा ततः संवत्सर आस Brh. Âr. Up. 1, 2, 4. श्रुतिद्वयं तु यत्र स्यात् M. 2, 14. विरामो ऽस्तु 73. शपथे नास्ति पातकम् 8, 112. अतर्दशाहं स्यातां चेतुर्नर्मरणान्मनी 5, 79. न चैवेकास्त्यकामता 2, 2, 83. 105. 8, 386. 10, 4. तत्रास सत्रम् MBh. 3, 10674. न त्वेवाहं जातु नासम् Bhag. 2, 12. अयोध्या नाम तत्रास्ति नगरी R. 1, 3, 6. न येनिसंकरश्चासीत्त्र नाचारसंकरः 6, 17. नासीत्पुरे वा राष्ट्रि वा तत्करो नाशुचिर्नरः 7, 14. यदिच्छामि ते । तदस्तु (das geschehe, gehe in Erfüllung) Çik. 56, 19. आसीद्वाजा नलो नाम N. 1, 1. so häufig am Anfange des Satzes R. 1, 43, 15. Hir. 4, 5. 7, 13. 9, 3. 26, 11. Çik. 93, 3. 103, 7. Bhāṭṭ. 6, 99. किवे सति wenn die Mittel da sind M. 4, 34. 11, 38. सति प्रदीपे सत्यग्नौ सत्सु तारारवीन्दुषु । विना मे मृगशावाह्या तमेभूतमिदं जगत् ॥ Bhāṭṭ. 1, 14. — न अस् bedeutet auch *verloren sein, hin sein, nicht mehr zu retten sein*: नायमस्तीति दुःखार्ता N. 7, 16. युधेम विक्रम्य रणे समेतास्तदैव सर्वे रिपवो हि न स्युः MBh. 3, 10284. अपि ह्यथ कुलं न स्याद्वाधवाणां कुतो भवान् Daç. 2, 24. यतो नास्ति जीवितं मम संप्रतम् Vid. 189. — अस्त्येतत् तथापि श्रूयताम् *so ist es, aber man höre dennoch* Pañkāt. 111, 15. 248, 17. अस्ति mit dem inf. P. 3, 3, 65. अस्ति भोक्तुम् *es ist Etwas zu essen* da Sch. अस्ति *so ist es* Çik. 14, 16. अस्ति wird als indecl. im gaṇa चादि und स्वरादि (vgl. Trik. 3, 4, 5) aufgeführt; die Lexicographen (AK. 3, 5, 18. H. 1541) geben *vorhanden* als Bedeutung an und so ist das Wort aufzufassen im comp. अस्तिक्षीरा *Milch habend* P. 2, 2, 24, Vārt. 9 (vgl. N. 10 zum gaṇa चादि). गौः Siddh. K. ब्राह्मणी H. 1541, Sch. Vgl. अस्तिव, अस्तिमत्, अस्तिप्रवाद, आस्तिक. Bemerkenswerth ist das mit dem Folgenden in keiner grammat. Verbindung stehende अस्ति, mit dem eine Erzählung eingeleitet wird: अस्ति कस्मिंश्चिदधिष्ठाने सोमिलिको नाम कालिकः प्रतिवसति स्म *so Etwas hat sich mal begeben: an einem Orte u. s. w.* Pañkāt. 132, 22. 169, 5. 209, 22. अस्ति कस्मिंश्चिद्वेदेदेशे महान्यग्रोधवृक्षे पुरा स्वयमरुमवसत् 163, 18. अस्ति मामीक्षितुं पूर्व ब्रह्मा नारायणस्तथा । महौ धमत्तौ किमवत्पादमूलमवापतुः ॥ Kathās. 1, 27. अस्ति पूर्वमहं व्यामचारी विद्याधरो ऽभवम् 22, 56. Anders aufzufassen ist अस्ति च Mañkū. 49, 17: अथवा ज्वलति प्रदीपः । अस्ति च मया प्रदीपनिर्वापणार्थमाग्नेयः कीटो धार्यते: hier weist अस्ति च auf Etwas hin, welches das durch अथवा eingeleitete Bedenken wieder entfernt: *es brennt aber die Lampe! Thut nichts zur Sache (zugleich ist dieses): ich trage ja bei mir u. s. w.* In Verbindung mit einem fut. ist अस्ति als Frage der Verwunderung aufzufassen: अस्ति तत्रभवान्वृषलं याजपियति *findet es wirklich Statt,*

*dass u. s. w.?* P. 3, 3, 146, Sch. त्वं न मंस्यसे महदेवमस्ति नाम Vop. 25, 12. — 2) *Jemandes sein, Jmd gehören, Jmd eigen sein, bei Jmd angetroffen werden, Jmd zu Theil geworden sein, Jmd zu Theil werden, Jmd geschehen*; mit dem gen.: नहि मे अस्त्यद्यो RV. 8, 91, 19. सक्तं यस्य रातये उत वा सति भूयसीः 1, 11, 8. अस्माकं वा तमेको ऽसीति At. Br. 3, 39. तस्यैवाहमस्मि Cat. Br. 1, 8, 1, 8. 6, 2, 13. नास्य सपत्न्याः सति 4, 19. यदन्यस्य सत्यन्येन चरति 2, 5, 2, 20. सान्निषाः सति मे M. 8, 57. 89. तवास्मि *ich bin dein Gefangener* 7, 91. न हि तस्यास्ति किञ्चित्स्वम् 8, 417. तस्य भयं नास्ति कुतश्च न 6, 40. तस्य प्रेत्य फलं नास्ति 3, 139. नास्ति स्त्रीणां पृथग्यज्ञो न व्रतं नाप्युपोषितम् 5, 155. कस्यासि N. 12, 88. किं नु मे स्यादिदं कृता किं नु मे स्यादकुर्वतः 10, 10. ऋषिपुत्रवचः श्रुत्वा सर्वासां मतिरास वै R. 1, 9, 30. नास्ति बुद्धिरयुक्तस्य Bhag. 2, 66. नमो ऽस्तु ते 11, 31. अस्त्येतदन्यसमाधिभीतुं देवानाम् Çik. 15, 1. अपराधो न मे ऽस्ति Hir. 1, 170. तत्रोपरि नास्त्येव गतिर्मम *da hinauf steht mir der Gang nicht frei, vermag ich nicht zu gehen* Vid. 283. mit dem dat.: (उतपः) सति दाम्प्रे RV. 1, 8, 9. वस्वी षु तं जग्निं अस्तु शक्तिः 7, 20, 10. mit dem loc.: असनिन्ने आह्वेनानि RV. 7, 8, 5. स्वाम्यं च न स्यात्कस्मिंश्चित् M. 7, 21. नैकत्र परिनिष्ठास्ति ज्ञानस्य पुरुषे क्वचित् N. 20, 6. — 3) *weilen, sich aufhalten, sich irgendwo befinden*: ये देवास इह स्थन् RV. 8, 30, 4. इहैव स्तम् 10, 83, 42. सति कावेषु वो दुर्वः 1, 37, 14. असनिन्ने अद्रिवा सखा ते, स्याम् वदथे 7, 20, 8. स तया समं तत्रासीद्वात्रीः काश्चित् *er verweilte mit ihr einige Nächte daselbst* Vid. 277. कासि हे मुधु Bhāṭṭ. 6, 11. अथर्वकामौ तस्यास्तां धर्म एव Ragh. 1, 25. — 4) *zu Etwas gereichen, mit dem dat.*: अस्ति हि ष्मा मदाय वः स्मसि ष्मा व्यमेषाम् RV. 1, 37, 15. यथा वेदसामसंद्ध्ये 89, 5. अतो यथा नो ऽविता वृधे 7, 24, 1. — 5) *hinreichen, einer Sache gewachsen sein; in Verbindung mit dem dat.*: न ह्याप्येद्रुणाप्येव स्यात् Cat. Br. 14, 5, 4, 12 = Brh. Âr. Up. 2, 4, 12. सा तेषां पावनाय स्यात् M. 11, 85. Vgl. u. 8. — 6) *sein (copula)*: तानि धर्मानि प्रथमान्यासन् RV. 1, 162, 12. 179, 2. तस्य युष्मां अस्मद्वयः 8, 31, 3. चित्तिरा उप बर्हणं चतुरा अयञ्जन्म् 10, 83, 7. अर्पतिद्यधि 44. नेदस्यात्तिभूरसानि Cat. Br. 4, 3, 4, 3. यशो जने ऽसानि, अयेवान्वस्यसो ऽसानि Taitt. Up. 1, 4, 3. ब्रह्मचार्यसानि Pār. Grh. 2, 2. भक्ता ऽसि मे सखा च Bhag. 4, 3. आसीदिदं तमेभूतम् M. 1, 5. त्रपवानरुमप्यासम् R. 3, 73, 20. तर्हिदिमस्तु भरतवाक्यम् Çik. 113, 6. सुस्थः सन् M. 8, 216. कुमार्युतमतो सतो 9, 90. धार्मिके सति राजानि 11, 11. Mit verschiedenen partic.: अस्त्वं हविरसत् Cat. Br. 1, 1, 4, 3. प्रेतो राजनि सज्योतिर्यस्य स्याद्विषये स्थितः M. 5, 82. गताः स्म निष्ठाम् MBh. 3, 10627. प्रस्थिताः स्म N. 17, 34. प्राप्ता ऽसि 3, 20. निर्गतौ स्वः Kathās. 2, 64. अस्मि जगत्सु ज्ञातस्त्वय्यागते यद्वक्तुमानयात्रम् Kir. 3, 6 (Sch.: अस्मि अहमित्यर्थव्ययम्: Colebr. Gr. p. 125 wird ein Beispiel [वामास्मि वाचि] angeführt, wo अस्मि wirklich für अहम् zu stehen scheint). सागरता मही पेष्मासीदीर्याजिता R. 1, 5, 1. पृष्ठः सन् M. 8, 94. विद्ययालंकृतो ऽपि सन् Hir. 1, 73. उपविष्टः सन् Vrt. 11, 17. विश्रातः सन् Mbh. 27. नाम्नि वापि कृते सति M. 5, 70. आचार्ये संस्थिते सति 80. Megh. 60. कृतव्या ऽस्मि न ते N. 1, 19. यस्मा अशनमाहुरिष्यत्स्यात् Cat. Br. 1, 3, 1, 10. यथा — स्य-

\*) Beim Druck stossen wir noch auf folgendes Beispiel: नृमांसमस्मि विक्रीपो गृह्यतामित्युवाच सः Kathās. 25, 187. Brockhaus übersetzt: *Hier bin ich und hier ist das Menschenfleisch, welches ich verkaufe, nimm es.*